

संपादकीय (उमेश कुमार तिवारी)

चुनौतियों के बावजूद बढ़ती हिंदी

बांग्ला संस्कृति का मूल स्वर सहिष्णुता, उदारता और समन्वय का रहा है। उन्नीसवीं सदी में बंगाल की धरती ने नवजागरण का स्वागत किया, जिसके मूल में ईश्वरचंद्र विद्यासागर और स्वामी विवेकानंद के विचार रहे। इस समन्वय की संस्कृति का ही असर रहा कि बंगाल की ही धरती से ना सिर्फ हिंदी पत्रकारिता का उद्भव हुआ, बल्कि उसकी जड़ें मजबूत भी हुईं। लेकिन वही बंगाल बदल गया है। बांग्ला संस्कृति समन्वय के सूत्रों को कहीं पीछे छोड़ती नजर आने लगी है। अगर ऐसा नहीं होता तो कोलकाता नगर निगम के उस पोस्टर पर विवाद नहीं होता, जिसमें बांग्ला और हिंदी भाषा के शब्दों का अनूदा और कलात्मक संगम था। बांग्ला संस्कृति के प्रतीक पर्व दुर्गा पूजा के दौर में भाषायी सौंदर्य और कला के अनूठे मेल पर राजनीति ने जब सवाल उठाया तो कोलकाता नगर निगम ने अपना पोस्टर ही वापस ले लिया। शायद निगम ने सोचा होगा कि उत्साह और उल्लास का स्वाद राजनीतिक कंकड़ से चूना जा हो। जिस पोस्टर पर विवाद हुआ, उसके बारे में जानना जरूरी है। यह भी जानना जरूरी है कि आखिर उसमें क्या रहा, जिससे पश्चिम बंगाल का विपक्षी दल तृणमूल कांग्रेस परेशान हो गया। दरअसल दुर्गा पूजा के दौरान दस से 21 अक्टूबर तक कोलकाता नगर निगम ने देश की पूर्व राजधानी वाले शहर में चलाए जा रहे सफाई अभियान के लिए एक विशेष पोस्टर जारी किया था। जिसमें लिखा था, मायेर कोरबो स्वच्छता से स्वागत यानी मां दुर्गा का स्वागत स्वच्छता से करेंगे। जैसा कि शब्दों से पता चलता है, पोस्टर के अकेले वाक्य में बांग्ला और हिंदी शब्दों का अनूदा मेल पेश किया गया। विज्ञापन के भाषा की जिन्हें समझा है, उन्हें पता है कि बांग्ला और हिंदी के इस अनूठे मेल के जरिए जो संदेश दिया गया, वह कितना प्रभावी रहा। लेकिन तृणमूल कांग्रेस को इस वाक्य के तीन शब्द ‘स्वच्छता से स्वागत’ बंगाल में हिंदी थोपने का षडयंत्र नजर आने लगा। वैसे भी राज्य में अब भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। भाजपा की पहचान हिंदुत्व और हिंदी को लेकर रही है। इसलिए तृणमूल के लिए यह आरोप लगाना और उसे भाजपा के हिंदी वर्चस्ववाद के छद्म नैरेटिव से जोड़ना आसान रहा। लेकिन कोलकाता नगर निगम ने राजनीति से किनारा करना उचित समझा और इसे बदलने में उसने देर नहीं लगाई। पोस्टर के वाक्य को पूरी तरह बांग्ला कर दिया, स्वच्छतार साथे, मां के स्वागत जनाई कर दिया। बांग्ला के इस वाक्य का भाव वही है, जो पहले वाक्य का रहा। अफसोस की बात है राजनीति की वजह से भाषाई मेल का अनूदापन गायब हो गया। संविधान सभा में हिंदी को जितनी चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ा, उससे ज्यादा हिंदी इन दिनों वह चुनौतियों से जुझ रही है। वैसे तो तमिल जैसी क्षेत्रीय राजनीतिक अस्मिताएं हिंदी की राह में रोड़े डालती रही हैं। इसका साथ कभी कर्नाटक तो कभी महाराष्ट्र देता रहा है। यहां गौर करने की बात यह है कि भारतीय राष्ट्रीयता के अंतर्गत कई उपराष्ट्रीयताएं भी हैं, जिसे हम क्षेत्रीय अस्मिताओं के नाम से भी जानते हैं। भारतीय राष्ट्रीयता का मूल स्वर हिंदी के जरिए उद्घाटित होता है। जिसे हम हिंदी हार्टलैंड या हृदय प्रदेश कहते हैं, वहां राष्ट्रीयता पर अपवादस्वरूप ही सवाल उठते हैं। लेकिन उपराष्ट्रीयताएं अक्सर हिंदी पर हमले के बहाने राष्ट्रीयता को प्रकारांतर से चुनौती देती रहती हैं। तब उनका एक मात्र तर्क यही होता है कि हिंदी थोपी जा रही है। दिलचस्प यह है कि जिस भाषा ने करीब दो सौ साल तक देश को गुलाम बनाए रखा, उसे अपनाने में उपराष्ट्रीयताएं गर्व समझती हैं। संविधान सभा की आखिरी बैठक के दिन सभा के अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद ने खुलेतीर पर स्वीकार किया था कि भाषा की समस्या का ठोस हल सभा नहीं निकाल पायी है। फिर भी उन्हें उम्मीद थी कि आने वाले दिनों में भाषा के मुद्दे पर देश गांधी की तरह सोचेगा। हालाकि महावीर प्रसाद त्यागी को ऐसी उम्मीद नहीं थी। इसीलिए उन्होंने अपने आखिरी भाषण में कहा था कि वे संविधान के पृष्ठों पर गांधीजी को खोज रहे हैं, लेकिन उन्हें गांधी नजर नहीं आए। पता नहीं, तृणमूल कांग्रेस को यह पता है या नहीं, लेकिन उसे जानना चाहिए कि आर्य समाज के प्रमुख ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को हिंदी में लिखने के लिए बांग्ला माटी के सपूत केशवचंद्र सेन ने स्वामी दयानंद सरस्वती को प्रेरित किया था। भावी भारत की संपर्क या राष्ट्रभाषा बनने की क्षमता हिंदी में देखने वाले प्राथमिक लोगों में केशवचंद्र सेन भी रहे। कांग्रेस का अध्यक्ष बनने के बाद बंगाल की माटी के ऋतिकारी सपूत सुभाष चंद्र बोस ने ना सिर्फ हिंदी सीखने के लिए शिक्षक रखा था, बल्कि उन्होंने कोलकाता नगर निगम के अध्यक्ष के नाते पिछली सदी के तीस के दशक में हिंदी को लेकर अर्थपूर्ण भाषण भी दिया था। हिंदी पर सवाल कभी-कभी कर्नाटक में भी उठता है और किंचित महाराष्ट्र में भी। लेकिन हिंदी को स्वाधीनता से पहले से ही सबसे बड़ी चुनौती तमिलनाडु में मिलती रही है। हाल ही में तमिलनाडु के कन्नर और कोयंबटूर के सरकारी अस्पतालों में मरीजों को दी जाने वाली दवाओं के पर्चे के कवर पर तमिल और अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी निर्देश छापे गए थे। जिसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर जारी करते हुए विपक्षी द्रमुक पार्टी के नेता टी.आर.बी. राजा ने सवाल उठाया कि क्या तमिलनाडु में चुपचाप तीन-भाषा नीति लागू की जा चुकी है। हिंदी की ग्रंथि से प्रभावित तमिलनाडु राजनीति सवाल उठाए तो विवाद होना ही था। जब विवाद बढ़ा तो दोनों सरकारी मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों ने मरीजों को दिए जाने वाले त्रिभाषी कवर का वितरण तत्काल रोक दिया और उसकी जगह तमिल और अंग्रेजी लिखी पर्चियां जारी कर दीं।

संगठन कौशल, राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ सार्वजनिक जीवन में विशिष्ट पहचान

कुछ व्यक्तित्व अपनी पहचान पद और प्रतिष्ठा से बनाते हैं, कुछ अपने विचारों से और कुछ अपने संकल्प को परिणाम में बदलने की कार्यशैली से। अमित शाह जी भारतीय राजनीति के ऐसे प्रमुख व्यक्तित्व हैं, जिनकी राजनीतिक यात्रा संगठन निर्माण, रणनीतिक दृष्टि, दृढ़ इच्छाशक्ति और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय जिम्मेदारियों के निर्वहन के संदर्भ में विशेष महत्व रखती है। आज 22 अक्टूबर को उनके जन्मदिवस के अवसर पर उनके सार्वजनिक जीवन और कार्यशैली पर विचार करना एक ऐसे नेतृत्व को समझने का अवसर है, जिसने संगठनात्मक राजनीति से राष्ट्रीय नेतृत्व तक का लंबा सफर तय किया है। अमित शाह जी के व्यक्तित्व की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि वे किसी लक्ष्य को निर्धारित करने के बाद उस प्रसे करने के लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य करते, संगठन को सक्रिय रखने और परिणामों की समीक्षा पर विशेष ध्यान देते हैं। उनके निकट रहकर कार्य करने का अवसर प्राप्त करने वाले व्यक्ति के रूप में मैंने उनकी कार्यपद्धति में लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता, समय के महत्व और दायित्वों के निर्वहन के प्रति गंभीरता को विशेष रूप से महत्वपूर्ण पाया है। उनका कार्य-दृष्टिकोण इस विचार को रेखांकित करता है कि केवल संकल्प व्यक्त करना पर्याप्त नहीं होता; संकल्प को सिद्ध तक पहुंचाने के लिए

निरंतर परिश्रम, अनुशासन और प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है। 22 अक्टूबर 1964 को जन्मे अमित शाह जी ने अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़कर की। इसके बाद उन्होंने भारतीय जनता पार्टी में विभिन्न संगठनात्मक जिम्मेदारियाँ निभाई और गुजरात की राजनीति में सक्रिय भूमिका के माध्यम से अपना राजनीतिक अनुभव विकसित किया। वर्ष 2013 में उन्हें भाजपा का राष्ट्रीय महासचिव और उत्तर प्रदेश का प्रभारी बनाया गया। वर्ष 2014 में बाद के राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व संभालने के पश्चां उनके नेतृत्व में संगठन विस्तार, युवा स्तर पर कार्यकर्ताओं की सक्रियता और चुनावी प्रबंधन को विशेष महत्व मिला। उनकी राजनीतिक यात्रा इस बात का उदाहरण है कि किसी बड़े संगठन की सफलता के लिए स्पष्ट दिशा, समर्पित कार्यकर्ता, मजबूत संपर्क व्यवस्था और जिम्मेदारियों का प्रभावी निर्वहन कितना आवश्यक होता है। किसी भी संगठन की वास्तविक शक्ति केवल उसके शीर्ष नेतृत्व में नहीं, बल्कि उन हजारों कार्यकर्ताओं में भी होती है, जो स्थानीय स्तर पर जनता से जुड़कर संगठन के उद्देश्यों को आगे बढ़ाते हैं। अमित शाह जी की संगठनात्मक कार्यशैली में लक्ष्य निर्धारण, कार्यकर्ताओं की भूमिका, परिस्थितियों का

आकलन और योजनाओं के क्रियान्वयन जैसे पहलुओं को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। इसी कारण भारतीय राजनीतिक विमर्श में उन्हें अक्सर ‘राजनीति का चाणक्य’ कहा जाता है। यह उपाधि मुख्यतः उनकी चुनावी रणनीति, संगठनात्मक विस्तार और राजनीतिक परिस्थितियों के विश्लेषण की क्षमता के संदर्भ में प्रचलित हुई है। हालाँकि, किसी भी सार्वजनिक व्यक्तित्व का वास्तविक मूल्यांकन केवल लोकप्रिय उपाधियों से नहीं, बल्कि उसके कार्यों, निर्णयों और उनके परिणामों से किया जाना चाहिए। अमित शाह जी का सार्वजनिक जीवन भारतीय राजनीति में संगठन तथा रणनीति की भूमिका को समझने का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। केंद्रीय गृह मंत्री के रूप में अमित शाह जी की भूमिका एक महत्वपूर्ण अध्याय नक्सलवाद और वामपंथी उग्रवाद के विरुद्ध अभियान रहा है। इसकां तक नक्सली हिंसा ने देश के अनेक क्षेत्रों में नागरिकों, सुरक्षा बलों और विकास कार्यों के सामने गंभीर चुनौतियाँ खड़ी कीं। विशेष रूप से छत्तीसगढ़, झारखंड और मध्य भारत के कई क्षेत्रों में इस समस्या का प्रभाव लंबे समय तक बना रहा। अमित शाह जी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नक्सलवाद से मुक्त कराने के लिए 31 मार्च 2026 की समय-सीमा निर्धारित

करने और उस दिशा में व्यापक अभियान चलाने पर जोर दिया। केंद्र और राज्य सरकारों के बीच समन्वय, सुरक्षा बलों की कार्रवाई, खुफिया तंत्र की मजबूती, नक्सली नेटवर्क पर प्रहार, आत्मसमर्पण की नीति तथा प्रभावित क्षेत्रों में विकास कार्यों को इस रणनीति में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। गृह मंत्रालय ने जुलाई 2026 में देश को वामपंथी उग्रवाद से मुक्त होने की घोषणा की। यह घटनाक्रम भारत की आंतरिक सुरक्षा के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना गया। इस अभियान में सुरक्षा बलों के साहस, अधिकारियों के योगदान, राज्य सरकारों के सहयोग और कठिन परिस्थितियों में कर्तव्य निभाने वाले जवानों की भूमिका को विशेष सम्मान के साथ याद किया जाना चाहिए। मेरे विचार में इस अभियान की महत्वपूर्ण विशेषता लक्ष्य को स्पष्ट रूप से निर्धारित करना और उसे प्राप्त करने के लिए समर्पित प्रयास करना है। किसी गंभीर राष्ट्रीय समस्या का समाधान केवल घोषणाओं से संभव नहीं होता। उसके लिए मजबूत इच्छाशक्ति के साथ प्रभावी रणनीति, संसाधनों का समुचित उपयोग, प्रशासनिक समन्वय और निरंतर निगरानी आवश्यक होती है। इसके साथ ही स्थायी शांति के लिए प्रभावित क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, रोजगार और संचार सुविधाओं का विस्तार भी उतना ही महत्वपूर्ण है। स्थानीय

समुदायों का विश्वास, आदिवासी नागरिकों के अधिकारों का सम्मान और विकास के अवसरों की उपलब्धता ही शांति को स्थायी आधार प्रदान कर सकती है। किसी भी राष्ट्रीय अभियान की व्यापक सफलता तब और अधिक सार्थक होती है, जब उसका सकारात्मक प्रभाव आम नागरिकों के जीवन में दिखाई देने लगे। केंद्रीय गृह मंत्री के रूप में अमित शाह जी के दायित्व केवल नक्सलवाद के विरुद्ध अभियान तक सीमित नहीं हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा, आतंकवाद से मुकाबला, सीमाओं की सुरक्षा, आंतरिक कानून-व्यवस्था के विषयों पर केंद्र-राज्य समन्वय और देश की आपराधिक न्याय व्यवस्था में सुधार जैसे महत्वपूर्ण विषय भी गृह मंत्रालय के कार्यक्षेत्र में आते हैं। भारतीय न्यायसंहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम के माध्यम से आपराधिक न्याय व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए। ये कानून 1 जुलाई 2024 से लागू हुए। इनका उद्देश्य न्यायिक प्रक्रियाओं को आधुनिक बनाना, तकनीकी और फॉरेंसिक के उपयोग को बढ़ाना तथा जांच और अभियोजन व्यवस्था में बदलाव लाना है। ऐसे सुधारों की वास्तविक सफलता प्रभावी क्रियान्वयन, पुलिस और न्यायिक तंत्र के प्रशिक्षण, पर्याप्त संसाधनों, समयबद्ध न्याय और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा से निर्धारित होती

है। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में राष्ट्रीय सुरक्षा और नागरिक स्वतंत्रताओं के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। अमित शाह जी की जिम्मेदारियों में सकारिता मंत्रालय भी शामिल है। भारत में सहकारी संस्थाओं की भूमिका कृषि, दुग्ध उत्पादन, ग्रामीण ऋण, विपणन और स्थानीय आर्थिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण रही है। सकारिता का मूल विचार सामूहिक प्रयास, साझा स्वामित्व और सदस्यों के हितों की रक्षा पर आधारित है। सहकारी संस्थाओं को आधुनिक तकनीक, पाददर्शी प्रबंधन, पेशेवर प्रशिक्षण और बाजार तक बेहतर पहुंच उपलब्ध करारकर ग्रामीण अवसर का लाभ उठाने में सहायक किया जा सकता है। इससे किसानों, छोटे उत्पादकों और ग्रामीण उद्यमियों के लिए नए अवसर विकसित होने की संभावना रहती है। इस क्षेत्र में संस्थाओं की वित्तीय स्थिति, लोकतांत्रिक संचालन, सदस्यों की भागीदारी और जवाबदेही पर ध्यान देना आवश्यक है। सहकारिता की सफलता तभी व्यापक होगी, जब उसका लाभ ग्रामीण परिवारों और स्थानीय समुदायों तक पहुंचे। किसी व्यक्ति की पहचान केवल उसके पद से नहीं बनती। उसके व्यवहार, कार्य के प्रति दृष्टिकोण, अध्ययन की प्रवृत्ति, निर्णय लेने की क्षमता और जिम्मेदारियों के निर्वहन का तरीका भी उसके व्यक्तित्व को विशिष्ट बनाता है।

मुकेश अंबानी के कारोबारी सामर्थ्य का अचानक मुरीद क्यों हुआ अमेरिका मार्को रुबियो ने जामनगर रिफाइनरी में क्या क्या देखा

गुजरात स्थित जामनगर में बुधवार को एक ऐसी मुलाकात हुई, जिसके मायने किसी औद्योगिक दौरे से कहीं ज्यादा बड़े हैं। अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो दुनिया की सबसे बड़ी सिंगल-साइट ऑयल रिफाइनरी देखने पहुंचे, जहां रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर मुकेश अंबानी तथा एजीक्यूटिव डायरेक्टर अनंत अंबानी ने उनका स्वागत नहीं दिखाई गईं, बल्कि रिलायंस के उस औद्योगिक सामर्थ्य से भी परिचित कराया गया, जिसकी जरूरत आज अमेरिका को भी महसूस हो रही है। कंपनी के मुताबिक, अंबानी ने उन्हें रिफाइनिंग कॉम्प्लेक्स के अलावा निर्माणधीन डेटा सेंटरों और चरणबद्ध तरीके से शुरू हो रही न्यू एनर्जी गीगा-फैक्ट्रियों की जानकारी दी। बातचीत में पारंपरिक ऊर्जा, नई ऊर्जा, तकनीकी सहयोग, मजबूत सप्लाई चेन और डेटा सेंटरों के लिए भरोसेमंद बिजली की जरूरत जैसे मुद्दे शामिल रहे। यानी चर्चा सिर्फ तेल खरीदने-बेचने की नहीं, बल्कि ऊर्जा और डिजिटल अर्थव्यवस्था के भविष्य की भी थी। नक्शेदेखी हम आपको बता दें कि जामनगर रिफाइनरी कॉम्प्लेक्स की संयुक्त कच्चा तेल प्रसंस्करण क्षमता प्रतिदिन 14 लाख बैरल है। इसमें 1999 में शुरू हुई पहली

रिफाइनरी और 2008 में चालू हुई निर्यात-केंद्रित दूसरी रिफाइनरी शामिल हैं। रिलायंस के मुताबिक, यह कॉम्प्लेक्स 216 से अधिक प्रकार के कच्चे तेल का प्रसंस्करण कर चुका है। इसकी सबसे बड़ी ताकत भारी और अधिक सल्फर वाले कच्चे तेल को भी उपयोगी पेट्रोलियम उत्पादों में बदलने की क्षमता है। यही क्षमता इसे अमेरिका के लिए रणनीतिक रूप से अहम बनाती है। वेनेजुएला का भारी कच्चा तेल दुनिया की हर रिफाइनरी आसानी से संसाधित नहीं कर सकती। लेकिन रिलायंस की जामनगर रिफाइनरी इस मामले में विशिष्ट क्षमता रखती है। अमेरिका की वेनेजुएला-केंद्रित तेल रणनीति और वहां से कच्चे तेल की आपूर्ति बढ़ाने की कोशिशों के बीच रिलायंस एक महत्वपूर्ण संभावित साझेदार बनकर उभरी है। रुबियो ने साफ कहा कि रिलायंस के पास वेनेजुएला समेत पश्चिमी देशों में निकलने वाले भारी कच्चे तेल को रिफाइन करने की खास क्षमता है। यही वजह है कि अमेरिका रिलायंस के साथ मिलकर काम करने के नए रास्ते तलाश रहा है। अनुमानों के मुताबिक, अक्टूबर में रिलायंस हर दिन वेनेजुएला से करीब 3.5 लाख से 3.7 लाख बैरल कच्चा तेल मंगा सकती हैं। इससे साफ है कि वेनेजुएला के तेल को इस्तेमाल करने की अमेरिकी रणनीति में जामनगर रिफाइनरी की भूमिका बेहद अहम हो सकती है। इस पूरे घटनाक्रम का दूसरा पहलू अमेरिकी घरेलू अर्थव्यवस्था है। अमेरिका में डीजल की कीमतों में उछाल और ईंधन आपूर्ति को लेकर चिंताओं के बीच राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन पर भारी दबाव है। नवंबर में होने वाले मध्यवर्धि चुनावों से पहले महो ईंधन का मुद्दा राजनीतिक रूप से भी

संवेदनशील है। रिलायंस इस तस्वीर में इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि जामनगर से डीजल, पेट्रोल और विमानन ईंधन सहित बड़ी मात्रा में रिफाइंड उत्पाद दुनिया भर में भेजे जाते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक 2025 की पहली छमाही में जामनगर से 2.166 करोड़ टन रिफाइंड पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात हुआ। इसमें 98.1 लाख टन डीजल, 61.4 लाख टन पेट्रोल और 20.6 लाख टन जेट ईंधन शामिल था। यूरोप इन उत्पादों का सबसे बड़ा क्षेत्रीय बाजार रहा। साथ ही अमेरिका के लिए रिलायंस की अहमियत सिर्फ उसकी रिफाइनरी तक सीमित नहीं है। भारत में अमेरिकी गैस की बढ़ती मांग भी इसकी बड़ी वजह है। रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका की गैस की हिस्सेदारी 10 प्रतिशत से बढ़कर 67 प्रतिशत हो गई है। यानी अब भारत को एलपीजी सप्लाई करने वाला अमेरिका सबसे बड़ा देश बन गया है। इसके अलावा, रुबियो के दौरे के पीछे एक और बड़ा आर्थिक पहलू है। ट्रंप प्रशासन अमेरिका में औद्योगिक उत्पादन और रोजगार वापस लाने की नीति को अपनी प्रमुख उपलब्धियों के रूप में पेश करता रहा है। इसी सिलसिले में टेक्सास के पोर्ट ऑफ ब्राउन्स्विल में प्रस्तावित नई तेल रिफाइनरी में रिलायंस की भागीदारी को खास महत्व दिया जा रहा है। अमेरिका में करीब पांच दशकों बाद लगने जा रही इस प्रमुख नई रिफाइनरी पर लगभग 3 से 4 अरब डॉलर खर्च होने का अनुमान है। इसकी सालाना प्रसंस्करण क्षमता करीब 6 करोड़ बैरल अमेरिकी कच्चे तेल की होगी। रिलायंस ने इसके उत्पादन का बड़ा हिस्सा खरीदने के लिए 20 साल का समझौता किया है और

इसके 2029 के आसपास परिवालन शुरू करने की उम्मीद है। रिलायंस की अहमियत का तीसरा पहलू रूस-यूक्रेन युद्ध है। 2022 में युद्ध शुरू होने के बाद भारत रूसी तेल का बड़ा खरीदार बनकर उभरा और रिलायंस ने भी रूसी कच्चे तेल का आयात बढ़ाया। कंपनी के तेल स्रोतों में रूस की हिस्सेदारी 2022 से पहले लगभग 3 प्रतिशत थी, जो 2025 में बढ़कर करीब 50 प्रतिशत तक पहुंच गई। रूसी तेल खरीदने के मुद्दे पर ट्रंप प्रशासन ने भारत पर अतिरिक्त टैरिफ का दबाव बनाया। इसके बाद रिलायंस ने रूसी कच्चे तेल का आयात घटाया। रुबियो ने स्वीकार किया कि भारत अपने ऊर्जा स्रोतों में विविधता ला रहा है, लेकिन रूस से बड़ी मात्रा में तेल खरीदना तुर्तंत बंद करना आसान नहीं है। उन्होंने भारत को अमेरिका का महत्वपूर्ण साझेदार भी बताया। उधर, अमेरिकी और अंतरराष्ट्रीय मीडिया इस दौरे को सिर्फ एक कारोबारी मुलाकात के तौर पर नहीं देख रहा है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि रिलायंस अमेरिका के कई अहम हितों से जुड़ी हुई है। अमेरिका चाहता है कि भारत रूसी तेल पर अपनी निर्भरता कम करे, वेनेजुएला के तेल का ज्यादा इस्तेमाल हो, ईंधन की कीमतों पर काबू पाया जा सके और अमेरिकी कंपनियों में निवेश बढ़े। इन सभी मुद्दों पर रिलायंस की भूमिका अहम हो सकती है। दिलचस्प बात यह है कि जहां ट्रंप प्रशासन रिलायंस के साथ ऊर्जा सहयोग बढ़ाने की संभावनाएं तलाश रहा है, वहीं ट्रंप के करीबी एलन मस्क का रिलायंस से टक्कर भी सामने आया है। मस्क की कंपनी स्टारलिनक भारत में परिवानन लाइसेंस हासिल करने की कोशिश कर रही है। मस्क ने आरोप लगाया कि भारत में जियो को

फायदा पहुंचाने के लिए स्टारलिनक के प्रवेश में बाधाएं डाली जा रही हैं। रिलायंस ने जवाब दिया कि उसे प्रतिस्पर्धा से कभी डर नहीं लगा और वह घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय निवेश एवं नवाचार का स्वागत करने वाले भारत में विकसित हुई है। देखा जाये तो यही विरोधाभास इस पूरे घटनाक्रम को और दिलचस्प बनाता है। अमेरिका के कारोबारी और राजनीतिक हित हर मुद्दे पर एक जैसे नहीं हैं, लेकिन ऊर्जा के मोर्चे पर रिलायंस की क्षमता वॉशिंगटन को उसके साथ बातचीत के लिए प्रेरित कर रही है। कुल मिलाकर देखें तो जामनगर में मार्को रुबियो का दौरा भारत की औद्योगिक ताकत और मुकेश अंबानी के कारोबारी सामर्थ्य का भी बड़ा संकेत है। दुनिया के सबसे ताकतवर देशों में शामिल अमेरिका के विदेश मंत्री का भारत आकर किसी उद्योगपति के साथ ऊर्जा और निवेश जैसे अहम मुद्दों पर चर्चा करना अपने आप में खास है। इससे पता चलता है कि वैश्विक ऊर्जा बाजार में रिलायंस की क्षमता और जामनगर रिफाइनरी की अहमियत को अमेरिका भी गंभीरता से लेता है। रिलायंस ने भी अपने बयान में कहा है कि इस दौरे के दौरान पारंपरिक और नई ऊर्जा के क्षेत्र में कारोबारी साझेदारी की संभावनाओं, सस्ती और भरोसेमंद ऊर्जा आपूर्ति, आधुनिक तकनीक और मजबूत सप्लाई चेन पर चर्चा होगी। कंपनी ने अमेरिकी कंपनियों के साथ तकनीक, इंजीनियरिंग और आधुनिक निर्माण के क्षेत्र में सहयोग की संभावनाओं पर भी अपने विचार रखे। बहरहाल, जामनगर से निकला संदेश साफ है कि भारत की औद्योगिक ताकत और मुकेश अंबानी की कारोबारी क्षमता को अमेरिका भी नजरअंदाज नहीं कर सकता।

साफ हवा के लिए सख्ती का समय आया

हर साल अक्तूबर से फरवरी के बीच, उत्तर भारत की भौगोलिक परिस्थिति और मौसमी दशा वायु प्रदूषण को बदतर बना देती हैं। हवा की गुणवत्ता इतनी खराब हो जाती है कि सांस लेना तक मुश्किल हो जाता है। पंजाब से लेकर पश्चिम बंगाल तक फैले सिंधु-गंगा के पूरे मैदानी इलाके में जैसे-जैसे तापमान गिरता है और मानसूनी हवाएं लौटती हैं, वैसे-वैसे भारी हवा प्रदूषण को धरती के पास रोकने लगती है। इससे धुआं और हानिकारक उत्सर्जन वायुमंडल में नीचे ही जमा होने लगते हैं और हवा दमघोड़ बन जाती है। नतीजतन, ग्रैप जैसे उपाय अपनाए जाते हैं। इसी बुधवार से दिल्ली-एनसीआर में ग्रैप-1 की शुरुआत हो गई है। शहर-दर-शहर वायु गुणवत्ता अब चिंता बढ़ाने लगी है। 20 अक्तूबर को दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्वआई) 179, यानी मध्यम श्रेणी में था। बुधवार को यह 244 पर पहुंच गया। हवा की तैली कम होने पर अगले 10 से 15 दिनों में प्रदूषण और बढ़ सकता है। फिलहाल आसमान साफ होने, हवा में प्रदूषकों के फैलाव के लिए पर्याप्त ऊंचाई होने और अनुकूल वायु प्रवाह के कारण स्थिति नियंत्रण में है, पर अगर कुछ दिनों तक हवा की गुणवत्ता ‘खराब’ श्रेणी में ही रहने का अनुमान है। दिल्ली में पीएम 2.5 का सालाना औसत स्तर लगातार खराब बना हुआ है और यह अभी करीब 100 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर है, जो भारत के 40 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर के सुरक्षित मानक से काफी अधिक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा-निर्देशों के



अनुसार, वैश्विक स्तर पर इसकी सुरक्षित सीमा महज पांच माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर है। इससे समझा जा सकता है कि प्रदूषण पर काबू पाने में हम कितने पीछे हैं। बेशक, 2021 से 2025 के बीच पीएम 2.5 का वार्षिक औसत स्तर 105 से घटकर 97 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर रहा, पर यह अब भी खतरनाक रूप से ऊंचा है। मुश्किल यह है कि हमारा तंत्र वायु प्रदूषण से निपटने के लिए तभी तत्पर होता है, जब प्रदूषण-स्तर खतरनाक सीमा को पार करने लगता है, जबकि पूर्वानुमान के आधार पर पहले से कारवाई की जा सकती है। इसके लिए जरूरी है कि दिल्ली-एनसीआर के तमाम शहरों-उप-नगरों के बीच बेहतर तालमेल हो। सवाल है कि गंगा के मैदानी इलाकों में वायु प्रदूषण से कैसे निपटा जाए? चूंकि यह भौगोलिक रूप से एक घिरा हुआ क्षेत्र है, इसलिए यहां प्रदूषण से पार पाने के लिए वैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर नीतियां बनानी होंगी। मसलन, अमेरिका के लॉस

एंजिल्स ने, जो पहाड़ों से घिरा हुआ क्षेत्र है, उत्सर्जन की निगरानी करके, स्वच्छ ईंधन अपनाकर और तकनीक आधारित क्षेत्रीय नियामक बनाकर धुंध पर काबू पाया। इतिहास गवाह है कि भारी औद्योगिकीकरण के दौर में भी अधिकारियों को कड़े कानून बनाने पड़े थे। जैसे, 1950 के दशक में लंदन में ‘पी-सूट’ (बहुत घना धुंध) देखा गया था। इससे निपटने के लिए स्वच्छ ईंधन के इस्तेमाल पर रोक लगाई गई। एशिया में बीजिंग एक बड़ा उदाहरण है, जहां के उद्योगों पर सख्त नियम लागू किए गए और समग्र प्रयासों से वहां की वायु गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार लाया गया। ऐसा नहीं है कि भारत ने प्रयास नहीं किए हैं। दिल्ली-एनसीआर और पूरे देश में प्रदूषण फैलाने वाले स्रोतों के लिए मानक लगातार सख्त किए गए हैं। गाड़ियों के मामले में भी 2017 से 2020 के दरम्यान बीएस-चार से बीएस-छह मानक अपनाए गए। स्वच्छ

ईंधन के नियम भी लागू हुए, पर उनके पालन में सख्ती हर जगह एक जैसी नहीं रही। इसी तरह, बिजली संयंत्रों, उद्योगों, कचरा दहन गृहों, घरों में स्वच्छ ईंधन के इस्तेमाल, छोटे औद्योगिक प्रतिष्ठानों और पुरानी गाड़ियों से होने वाले प्रदूषण की समस्या अब भी बनी हुई है। इससे निपटने के लिए राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर ठोस कार्ययोजना जरूरी है। हमारे पास ऐसे मानक भी होने चाहिए, जिनसे यह पता चल सके कि उत्सर्जन में कितनी ताकत है, हवा की गुणवत्ता कितनी बेहतर हुई है और स्वास्थ्य पर किस हद तक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है? जरूरी यह भी है कि राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएयू) का लक्ष्य केवल उन शहरों तक सीमित नहीं रहे, जहां प्रदूषण तय मानक से अधिक है। इसमें सभी शहरों को शामिल करना चाहिए। इसी तरह, हमें केवल उन कारणों पर ध्यान नहीं लंदन में ‘पी-सूट’ (बहुत घना धुंध) देखा गया था। इससे निपटने के लिए स्वच्छ ईंधन के इस्तेमाल पर रोक लगाई गई। एशिया में बीजिंग एक बड़ा उदाहरण है, जहां के उद्योगों पर सख्त नियम लागू किए गए और समग्र प्रयासों से वहां की वायु गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार लाया गया। ऐसा नहीं है कि भारत ने प्रयास नहीं किए हैं। दिल्ली-एनसीआर और पूरे देश में प्रदूषण फैलाने वाले स्रोतों के लिए मानक लगातार सख्त किए गए हैं। गाड़ियों के मामले में भी 2017 से 2020 के दरम्यान बीएस-चार से बीएस-छह मानक अपनाए गए। स्वच्छ

चाहिए, बल्कि पूरे क्षेत्र में होनी चाहिए। पंजाब-हरियाणा में पराली जलाने से उड़ता धुआं इसका ज्वलंत उदाहरण है, जिससे सर्दियों में हर साल दिल्ली-एनसीआर का दम घुटता है। यहां अक्सर ‘एंटी स्मॉग गन’ और पानी के छिड़काव पर जोर दिया जाता है, लेकिन इनसे हमें नमी तो बढ़ती है, पर ये प्रदूषण पैदा करने वाले सूक्ष्म कणों को खत्म नहीं कर पाते। टूटे हुए ड्रिपिाइडर या रास्तों पर मशीनों से सफाई करने पर अक्सर धूल फिर से हवा में उड़ने लगती है, इसलिए सड़कों की मरम्मत, किनारे पर हरियाली और सर्दियों से पहले डामर का काम करना फायदेमंद होगा। रही बात गाड़ियों से होने वाले प्रदूषण की, तो इसे रोकने के लिए गंगा के पूरे मैदानी क्षेत्र में सख्ती बरतनी होगी। पुराने डीजल ट्रक एक से दूसरे शहर में पहुंच जाते हैं और वहां प्रदूषण फैलाते हैं, इसलिए प्रदूषण जांच केंद्रों की व्यवस्था में सुधार आवश्यक है। दिल्ली के साथ एक अच्छी बात यह है कि यहां मेट्रो का बड़ा जाल है। इसका विस्तार और सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को अंतिम छोर तक बढ़ाना प्रदूषण के खिलाफ काफी कारगर प्रयास होगा। जाहिर है, तात्कालिक प्रयास करने के बजाय हमें पूरे साल चलने वाले कदम उठाने होंगे। भौगोलिक रूप से घिरे होना हमारी प्राकृतिक स्थिति है, लेकिन पराली जलाने की घटनाएं घटने और सालाना औसत में मामूली सुधार के बावजूद दमघोड़ हवा में जीना नीतिगत विफलता ही मानी जाएगी।



एक नज़र

दिवाली पर खुलेगा गौर चौक अंडरपास खत्म होगी ग्रेटर नोएडा वेस्ट में जाम की समस्या

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा वेस्ट में गौर चौक अंडरपास को दौवाली (8 नवंबर) पर जनता के लिए खोल जा सकता है। इस अंडरपास को इससे पहले 15 अगस्त के दिन खोलने की तैयारी थी मगर डेडलाइन आगे बढ़ा दी गई थी। इस अंडरपास के खुलने के बाद इलाके के करीब 2 लाख निवासियों को रोजाना के ट्रैफिक जाम से निजात मिलने की उम्मीद है। हालांकि, आधिकारिक तारीख का अभी औपचारिक ऐलान होना बाकी है। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक अंडरपास लगभग 95 फीसदी बनकर तैयार है। 700 मीटर लंबे इस अंडरपास के खुलने के बाद नोएडा और ग्रेटर नोएडा के वाहन चालकों को ट्रैफिक जाम से मुक्ति मिलने की उम्मीद है। यह अंडरपास सूरजपुर, क्रॉसिंग्स रिपब्लिक और दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे से आने-जाने वालों के सफर को आसान बनाएगा। अंडरपास के जरिए चौक पर क्रॉसिंग बिना किसी रुकावट के पूरी तरह सिग्नल-फ्री होगी और चौराहों पर वाहनों की दबाव घटेगा। टाइम्स ऑफ इंडिया के मुताबिक, फिलहाल अंडरपास में आर्ट वर्क और आखिरी चरण के काम किए जा रहे हैं। लाइटिंग लगाना, लेन की मार्किंग करना और पेंटिंग बनाने जैसे काम चल रहे हैं। अंडरपास की दीवारों को गौतम बुद्ध और प्रकृति से जुड़ी पेंटिंग के जरिए सजाया जा रहा है। गौर चौक अंडरपास ताज हाईवे के बाल से होते हुए ग्रेटर नोएडा (सुरजपुर) और गौर सिटी को आपस में जोड़ेगा। यह अंडरपास 60 मीटर चौड़ा है इसमें 6 लेन हैं। इसे 92 करोड़ रुपये की लागत से बनाया जा रहा है। आपको बता दें कि गौर चौक पर भारी ट्रैफिक दबाव की स्थिति हर रहती है। यह नॉर्थ में गाजियाबाद, साउथ में ग्रेटर नोएडा (सूरजपुर), ईस्ट की ओर से दिल्ली तो वेस्ट की ओर से नेशनल हाइवे 24 को आपस में जोड़ता है। इस वजह से यह ग्रेटर नोएडा के उन कॉरिडोर में गिना जाता है जहां पर ट्रैफिक जाम की स्थिति एक गंभीर समस्या है। वाहनों की किलोमीटर लंबी कतारें लगना आम बात है। इससे लोगों का काफी समय भी बर्बाद होता है। ग्रेटर नोएडा इंस्ट्रिक्टवल डेवलपमेंट ऑथोरिटी ने 2024 में इस प्रोजेक्ट की योजना बनाई थी। काम जुलाई 2024 में शुरू कर दिया गया था। प्रोजेक्ट पूरा करने की डेडलाइन 18 महीने तय की गई थी। हालांकि ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) और पीक आवर्स ट्रैफिक के दौरान कंस्ट्रक्शन रोकें जाने के वजह से इसमें देरी हुई।

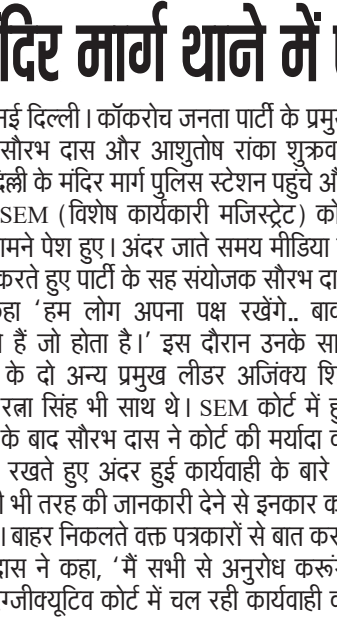
त्रिपुरा और वहां के युवक पर आपतिजनक टिप्पणी करने वाले कटेंट क्रिएटर की मुश्किलें बढ़ीं, कोर्ट ने हिरासत में लेजा

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने त्रिपुरा के एक युवक के साथ कथित तौर पर नस्ली दुर्व्यवहार और राज्य के नाम को लेकर अपमानजनक टिप्पणी करने के मामले में कटेंट क्रिएटर और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर आमिर शौकीन को शुक्रवार को एक दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। दिल्ली पुलिस ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल होने के बाद गुरुवार को शौकीन को गिरफ्तार किया था। वीडियो में कथित तौर पर वह त्रिपुरा के एक युवक के साथ नस्ली दुर्व्यवहार और अपमान करते हुए दिखाई दे रहा है। पुलिस ने इस वीडियो का स्वतः संज्ञान लिया था। उधर कोर्ट के फैसले की जानकारी देते हुए आमिर शौकीन के वकील विनीत जैन ने बताया, ‘आमिर को सदर बाजार पुलिस ने आज कोर्ट में पेश किया। पुलिस ने 6 दिनों की पुलिस हिरासत की मांग की थी लेकिन जल ने उसे 1 दिन की न्यायिक हिरासत दी है और कर कल फिर उसे कोर्ट के समक्ष पेश किया जाएगा। एक वीडियो वायरल हो रही है, उसे लेकर यह पेशी हुई थी। आगे उन्होंने कहा, इस वीडियो को लेकर सदर बाजार थाने में FIR दर्ज की गई है। सिर्फ इसी मामले में FIR दर्ज की गई है। अन्य किसी मामले में FIR दर्ज नहीं की गई है। भारतीय न्याय संहिता की धाराओं 192, 196, 352 और 353 के तहत मामला दर्ज किया गया है। हमें जानकारी मिली है कि SC-ST एक्ट के तहत भी आरोप लगाए गए हैं। सूत्रों के मुताबिक, दिल्ली पुलिस की इंटेलिजेंस पयुजिन एंड स्ट्रैटेजिक ऑपरेशंस (IFSO) इकाई कथित नस्ली दुर्व्यवहार के वायरल वीडियो की जांच कर रही है। पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए विशेष पुलिस इकाई (SPUNER) ने IFSO इकाई को औपचारिक रूप से पत्र लिखकर वीडियो की जांच करने के लिए कहा है। यह पूरा मामला आरोपी युवक का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद चर्चा में आया। इसके बाद केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किशन रीजीजू और त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने भी इस घटना को लेकर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की थी। पुलिस सूत्रों का कहना है कि यह वीडियो कथित तौर पर करीब एक महीने पहले अहमदाबाद में रिकॉर्ड किया गया था और मामले में सात से आठ लोगों की भूमिका की जांच की जा रही है।

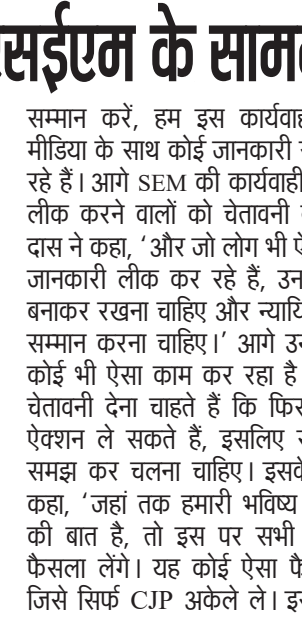


सरकार का फैसला ना तो मनमाना और ना ही सनक भरा; किस मामले को लेकर हाई कोर्ट ने कहा ऐसा

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने उस पुनर्विचार याचिका को खारिज कर दिया है, जिसमें उसके उस फैसले को चुनौती दी गई थी, जिसके तहत कोर्ट ने सरकार की उस नीति को सही ठहराया था, जिसमें उसने EWS (आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों) और वंचित समूहों के छात्रों को स्कूल यूनिफॉर्म देने के बजाय सीधे नकद सहायता देने का निर्णय लिया था। इस दौरान हाईकोर्ट ने अपने पिछले फैसले को सही बताते हुए कहा कि सीधे कैश देना पूरी तरह से मनमाना, सनकी भरा या अनियंत्रित नहीं कहा जा सकता। इसके साथ ही अदालत ने सरकार के निर्णय को सही ठहराने वाले अपने पहले के फैसले को चुनौती देने वाली पुनर्विचार याचिका को खारिज कर दिया। अदालत ने कहा कि उसे अपने पिछले फैसले में कोई स्पष्ट गलती नहीं मिली, और न ही ऐसा कोई तथ्य मिला जिस पर दिल्ली सरकार की नीति को स्वीकार करने से पहले विचार न किया गया हो। दिल्ली सरकार की इस नीति के तहत पात्र छात्रों को यूनिफॉर्म खरीदने के लिए पर्याप्त राशि दी जाती है। यह विवाद तब शुरू हुआ जब दिल्ली सरकार ने 10 जून, 2025 को एक नीति बनाई जिसमें स्कूली बच्चों को सीधे यूनिफॉर्म देने की बजाय उनके लिए नगद तथ्य मिला जिस पर दिल्ली सरकार की नीति को स्वीकार करने से पहले विचार न किया गया। जस्टिस सुब्रमण्यम प्रसाद और जस्टिस रेणु भटनागर की पीठ ने इस याचिका पर फैसला सुनाते हुए कहा कि अदालतें आमतौर पर नीतिगत फैसलों में तब तक दखल नहीं देती, जब तक कि वे इतने मनमाने, सनक भरे या अनियंत्रित न हों कि अदालत की



अंतरात्मा को ही झकझोर दें। पीठ ने कहा कि यह पुनर्विचार याचिका असल में पूरे मामले पर फिर से बहस करने की एक कोशिश थी, जो पुनर्विचार याचिका के अधिकार क्षेत्र में नहीं आती, क्योंकि उसका दायरा बेहद सीमित होता है। अदालत ने जोर देकर कहा कि पुनर्विचार



सम्मान करें, हम इस कार्यवाही के बारे में मीडिया के साथ कोई जानकारी साझा नहीं कर रहे हैं। आगे SEM की कार्यवाही की जानकारी लीक करने वालों को चेतावनी देते हुए सौरभ दास ने कहा, ‘और जो लोग भी ऐसे तुरंत-तुरंत जानकारी लीक कर रहे हैं, उनको भी मर्यादा बनाकर रखना चाहिए और न्यायिक प्रक्रिया का सम्मान करना चाहिए।’ आगे उन्होंने कहा, जो कोई भी ऐसा काम कर रहा है तो उनको हम चेतावनी देना चाहते हैं कि फिर हम भी कुछ ऐक्शन ले सकते हैं, इसलिए सभी को थोड़ा समझ कर चलना चाहिए। इसके आगे उन्होंने कहा, ‘जहां तक हमारी भविष्य की योजनाओं की बात है, तो इस पर सभी लोग मिलकर फैसला लेंगे। यह कोई ऐसा फैसला नहीं है, जिसे सिर्फ CJP अकेले ले। इस आंदोलन से

कई लोग जुड़े हुए हैं, और सभी लोग सोच-विचार कर तय करेंगे कि आगे क्या करना है।’ इसके बाद उन्होंने बेहद आत्मविश्वास के साथ कहा कि ज्ञानेश कुमार का इस्तीफा तो होना ही है। कॉकरोच पार्टी के ये नेता SEM कोर्ट के दो दिन पहले दिए आदेश के आधार पर पेशी के लिए पहुंचे थे। उधर स्थरूकोर्ट में हुई पेशी के बाद जब आशुतोष रांका से यह पूछा गया कि अगर नेताओं को हिरासत में ले लिया जाएगा तो यह आंदोलन कैसे आगे बढ़ेगा, तो CJP के सह संयोजक ने कहा, आंदोलन जारी रहेगा। हम नेता नहीं हैं, हम उस मंच के संरक्षक हैं जो हमें इस देश के लोगों ने दिया है, और हम बस अपना सर्वश्रेष्ठ करने की कोशिश कर रहे हैं। हम जेल में रहें या बाहर, आंदोलन चलता रहेगा। हमने अपने बारे में और इस व्यवस्था के काम करने

के तरीके के बारे में बहुत कुछ सीखा है। जाहिर है, हम जरूरत के हिसाब से खुद में बदलाव लाएंगे और आगे बढ़ेंगे। इससे पहले बुधवार को दिल्ली के एक विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट (SEM) ने सौरभ दास और आशुतोष रांका को उस हलफनामे के आधार पर दोनों को रिहा करने का आदेश दिया था, जिसमें उन्होंने कहा था कि वे शांति भंग नहीं करेंगे और जब तक जंतर-मंतर अधिसूचित धरना स्थल नहीं है, तब तक वहां विरोध-प्रदर्शन का आह्वान नहीं करेंगे। जिसके बाद कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 23 अक्टूबर को दोपहर तीन बजे निर्धारित की थी। बुधवार को रिहा करते हुए कोर्ट ने दोनों को जांच पूरी होने तक 50 हजार रुपये का निजी बॉन्ड और जमानती बॉन्ड जमा करने का निर्देश दिया था।

ज्ञानेश कुमार के खिलाफ दिल्ली में फिर प्रोटेस्ट, हिरासत में कई प्रदर्शनकारी; जा रहे थे चुनाव आयोग

नई दिल्ली। सेंट्रल दिल्ली में एसआईआर के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे कई प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया। यह प्रदर्शनकारी भारतीय चुनाव आयोग मुख्यालय की ओर जा रहे थे। इनका मकसद था कि वोटर लिस्ट से मतदाताओं के नाम हटाने का विरोध कर सकें। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ नारेबाजी की। ‘पीपुल अगेंस्ट एसआईआर’ की दिल्ली समन्वय समिति की ओर से आयोजित इस मार्च में छात्रों, युवाओं और किसानों सहित कई लोगों ने हिस्सा लिया। प्रदर्शनकारी तिरंगा और संगठन के बैनर लेकर मार्च में शामिल हुए। प्रदर्शनकारियों ने ‘ज्ञानेश कुमार इस्तीफा दो’, ‘एसआईआर रोको’ और ‘वोट चोरी बंदीश्त नहीं करेंगे’ जैसे नारे लगाए। मार्च में माकपा की वरिष्ठ नेता वृंदा करात, ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक वुमेंस एसोसिएशन (एआईडीडब्ल्यूए) और ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन (एआईडीएसओ) के सदस्य भी शामिल हुए। मार्च कोलाबाड़ी मार्ग और भाई वीर सिंह मार्ग के चौराहे पर स्थित गोल डाकखाना के पास से शुरू हुआ। क्रांतिकारी युवा संगठन (केवाईएस) और स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) ने भी इस प्रदर्शन को समर्थन दिया। मार्च में दिल्ली, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ता भी शामिल हुए। मार्च से पहले बंगला साहिब गुरुद्वारे के पास सुरक्षा बढ़ा दी गई और दिल्ली पुलिस और रैपिड एक्शन फोर्स (आरएफएफ) के जवानों को बड़ी संख्या में तैनात किया गया। पुलिस द्वारा प्रदर्शनकारियों को रोके जाने पर वे सड़क पर बैठ गए और आयोजकों की घोषणा के अनुसार ‘जन संसद’ आयोजित की। एक प्रदर्शनकारी ने कहा कि यह जंतर-मंतर को निर्धारित प्रदर्शन स्थल के रूप में बहाल करने का मामला नहीं, बल्कि लोकतंत्र और देश को बचाने की लड़ाई है। एक अन्य प्रदर्शनकारी ने देशभर में विभिन्न संगठनों द्वारा प्रदर्शन की घोषणाओं का जिक्र करते हुए कहा कि जंतर-मंतर को प्रदर्शन स्थल की अधिसूचित सूची से हटाए जाने के बाद देश की हर सड़क जंतर-मंतर बन जाएगी। ‘पीपुल अगेंस्ट एसआईआर’ ने विभिन्न शहरों में हो रहे प्रदर्शनों की जानकारी देने के लिए एक वेबसाइट भी शुरू की है। इस समूह के अनुसार, 18 राज्यों के 88 शहरों में 145 संगठनों की भागीदारी से प्रदर्शन की योजना बनाई गई है। समूह ने शुक्रवार को होने वाले प्रदर्शनों की सूची जारी की है और एसआईआर के खिलाफ अपने अभियान के तहत एक नवंबर तक के कार्यक्रमों की घोषणा की है। आयोजकों ने किसानों, मजदूरों, युवाओं, महिलाओं और समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों से राष्ट्रीय ध्वज लेकर मार्च में शामिल होने की अपील की। उन्होंने कहा कि मार्च शांतिपूर्ण और अनुशासित रहेगा। पुलिस जहां भी मार्च को रोकेंगी, वहां प्रतिभागी ‘जन संसद’ आयोजित करेंगे। इसके बाद प्रस्ताव पारित किए जाएंगे और राष्ट्रगान गाया जाएगा।

नेहा बोरा को भरना ही पड़ेगा पीस बॉन्ड, दिल्ली हाई कोर्ट से बड़ा झटका

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने AISA अध्यक्ष नेहा बोरा की उस याचिका को खारिज कर दिया है, जिसमें उन्होंने (विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट) के उस नोटिस को चुनौती दी थी, जिसमें उनसे जांच के दौरान शांति बनाए रखने के लिए 10,000 रुपये का पर्सनल बॉन्ड भरने और एक जमानतदार (surety) देने के लिए कहा गया था। यह आदेश जस्टिस सुब्रमण्यम प्रसाद की बेंच ने पढ़कर सुनाया। इसका साथ ही कोर्ट ने मजिस्ट्रेट को भी कुछ निदेश दिए हैं, जिनमें बोरा को इस मामले से जुड़ी सभी जरूरी सामग्री उपलब्ध कराना भी शामिल है। इससे एक दिन पहले कोर्ट ने इस मामले में अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। SIR में हुई कथित गड़बड़ियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों में शामिल रही नेहा बोरा ने हाई कोर्ट में दायर अपनी इस याचिका में SEM द्वारा अपने खिलाफ जारी नोटिस को खरब करने और पुलिस को उनके खिलाफ जबरदस्ती की कार्यवाई न करने का निर्देश देने की मांग की

थी। हालांकि उच्च न्यायालय ने उनकी मांग मानने से इनकार करते हुए उनकी याचिका को खारिज कर दिया। बीते दिन हुई सुनवाई के दौरान नेहा बोरा ने कोर्ट में दर्लाल दी थी कि नागरिकों को राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। इस दौरान जस्टिस सुब्रमण्यम प्रसाद की पीठ ने करीब तीन घंटे तक बोरा और पुलिस के वकील को खतरे के बाद याचिका पर आदेश सुरक्षित रख लिया था। पीठ ने कहा था कि वह शुक्रवार की शाम अपने आदेश को सुनाएगी। हाई कोर्ट में बहस के दौरान बोरा की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल शंकरनारायणन ने कहा कि विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट (SEM) ने नोटिस जारी करते समय अपने विवेक का इस्तेमाल नहीं किया, बल्कि महज कट-एंड-पेस्ट किया। पुलिस के नोटिस का जिक्र करते हुए वकील ने कहा, नोटिस के अनुसार, बोरा ने मंडी हाउस के गोल चक्र पर विरोध प्रदर्शन के दौरान जोर-जोर से चिल्लाया था।

रेखा सरकार दिल्ली के इन 48 गांवों को देगी ‘शहरी’ दर्जा; सड़क, सीवर और अन्य सुविधाओं का रास्ता होगा साफ

नई दिल्ली। दिल्ली की रेखा गुप्ता सरकार ने राजधानी के नियोजित और एकीकृत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 48 गांवों को शहरीकृत करने का निर्णय लिया है। इसका उद्देश्य इन गांवों की वैधानिक स्थिति को दिल्ली के बदलते शहरी परिदृश्य के अनुरूप बनाना और इनके भविष्य के विकास की बेहतर योजना तैयार करने का आधार उपलब्ध करना है। इस बारे में जानकारी देते हुए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा है कि इस निर्णय से संबंधित गांवों में भूमि उपयोग, सड़क संपर्क सीवर, जलपूर्ति, स्वच्छता और अन्य नागरिक सुविधाओं की जरूरतों पर अधिक व्यवस्थित एवं समन्वित ढंग से विचार करने का अवसर मिलेगा। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता इस विषय पर आगे कहा कि दिल्ली के गांव हमारी सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक जीवन और विकास यात्रा का अभिन्न हिस्सा हैं। गांवों की खुशहाली, वहां रहने वाले परिवारों के जीवन स्तर में सुधार और उन्हें बेहतर बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करने के लिए सुनियोजित विकास बेहद जरूरी है। सरकार की कोशिश है कि दिल्ली का विकास संतुलित, समावेशी और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप हो। आगे उन्होंने कहा, 48 गांवों का शहरीकरण इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे इन क्षेत्रों की विकास संबंधी आवश्यकताओं का व्यवस्थित आकलन करने, नागरिक

सुविधाओं की बेहतर योजना बनाने और संबंधित एजेंसियों के बीच समन्वय मजबूत करने का आधार तैयार होगा। हमारा लक्ष्य गांवों की पहचान और उनकी विरासत का सम्मान करते हुए उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ना है। सरकार के निर्णय के इन 48 गांवों को शहरीकृत करने का फैसला किया है, उनमें बकौली, हमीरपुर, पल्ल, कुलकर्पुर, सिंघोला, सुंगरपुर दिल्ली, सुंगरपुर शाहदरा, तालापुर कर्ना, ठिंसी दौलतपुर, राजपुर कर्ना, आँदवी, मुंशापुर शाहपुर गढ़ी, निजामपुर रसदपुर, चंटेसर, पुर दिल्ली, जमतपुर दिल्ली, सुल्तानपुर मांजर, पुर शाहदरा, सबापुर दिल्ली, देवराणा, घुममहेड़ा, जैनापुर, झटिकरा, कांगंनहेड़ी, राधोपुर, रावता, शिकारपुर, बिजवासन, नानक हेड़ी, बकरगढ़, दासा, गलिबपुर, इस्फापुर कैर, मुंडेला कर्ना, मुंडेला खुर्द, सुरखपुर और चक चिल्ल शामिल हैं।



गाड़ियों की छतों व पायदान पर कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।

कदापि यात्रा न करें।



एक नज़र

कच्चा बादाम गर्ल को 1.20 करोड़ का नोटिस; कानपुर में अंजलि अरोड़ा स्टेज छोड़कर गई थी , 2.75 लाख भी लिए

कानपुर,(एजेंसी)। कानपुर के लाजपत भवन में 15 अक्तूबर को आयोजित नगाड़ा नाइट डाड्डिया प्रोग्राम को लेकर विवाद बढ़ गया है। प्रोग्राम में करीब 12 मिनट की परफॉर्मेंस देने के बाद स्टेज छोड़कर चली गईं सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर और ‘कच्चा बादाम’ फेम अंजलि अरोड़ा को आयोजक आशीष कुमार ने 1.20 करोड़ रुपये का कानूनी नोटिस भेजा है। आयोजक की ओर से अधिवक्ता करीम अहमद सिद्दीकी ने यह जानकारी दी। आयोजक का आरोप है कि अंजलि के अचानक कार्यक्रम छोड़ने से आयोजन प्रभावित हुआ और उन्हें नुकसान उठाना पड़ा। जानकारी के मुताबिक, कार्यक्रम में प्रस्तुति देने के लिए अंजलि अरोड़ा के साथ तीन लाख रुपये में समझौता हुआ था। आयोजकों का दावा है कि इसमें से 2.75 लाख रुपये उनके खाते में ट्रांसफर किए जा चुके थे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, नगाड़ा नाइट डाड्डिया शाम करीब 7:30 बजे शुरू हुआ, जबकि अंजलि रात लगभग 9:52 बजे मंच पर पहुंचीं। उन्हें देखने और उनकी प्रस्तुति का आनंद लेने के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंचे थे। मंच पर पहुंचने के बाद अंजलि ने कानपुर के लोगों का अभिवादन किया और ‘नगाड़ा संग ढोल बाजे’ गाने पर प्रस्तुति दी। इसी दौरान उन्होंने भीड़ और सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठाए। अंजलि का कहना था कि दर्शकों की सुरक्षा का उचित ध्यान नहीं रखा जा रहा है और भीड़ में किसी को चोट लगने की बात भी सामने आई है। इसके बाद डीजे पर उनका चर्चित गाना ‘कच्चा बादाम’ बजाया गया तो वह नाराज हो गईं। उन्होंने प्रस्तुति रोककर आयोजकों को मंच पर बुलाने की मांग की। अंजलि ने माइक पर कहा कि क्या कलाकारों का सम्मान करना नहीं आता और आयोजन का प्रबंधन कहाँ है। उन्होंने दर्शकों से माफ़ी मांगते हुए कहा कि लोग घंटों से गर्मी में इंतजार कर रहे हैं, इसलिए व्यवस्थाएं बेहतर होनी चाहिए थीं। कार्यक्रम से जुड़ी जानकारी के अनुसार, अंजलि ने मोमेंटो लेने से भी इनकार कर दिया और कुछ ही दूर बाद मंच छोड़कर चली गईं। उनके नाराजगी जताने और कार्यक्रम बीच में छोड़ने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। अब आयोजक की ओर से 1.20 करोड़ रुपये का नोटिस भेजे जाने के बाद विवाद ने नया मोड़ ले लिया है। हालांकि, नोटिस में किए गए दावों और आरोपों पर अंजलि अरोड़ा का पक्ष सामने आने के बाद ही मामले की पूरी स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

राजकुमार भाटी नहीं संभले तो हटा देंगे, रामगोपाल यादव का सपा प्रवक्ता को अल्टीमेटम

नई दिल्ली,(एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के इटावा में एमएलसी चुनाव में वोट डालने के बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और राज्यसभा सांसद रामगोपाल यादव ने राजकुमार भाटी के बयान पर नाराजगी जताई है। यहीं रामगोपाल यादव ने सपा प्रवक्ता राजकुमार भाटी को अल्टीमेटम भी दिया। उन्होंने कहा कि राजकुमार भाटी का बयान व्यक्तित्व है। पार्टी इसका विरोध करती है। उन्हें इस तरह के बयान नहीं देना चाहिए. अगर वह नहीं संभले और ऐसे बयान देते रहे तो उन्हें प्रवक्ता के पद हटा दिया जाएगा। इस दौरान रामगोपाल ने सपा के प्रत्याशियों के जीत का दावा किया। इसके बाद भाजपा पर निशाना भी साधा। दरअसल, पिछले दिनों सपा प्रवक्ता राजकुमार भाटी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुआ था। इस वायरल वीडियो में राजकुमार भाटी मंच पर कुछ लोगों के साथ हिंदू देवी देवताओं को ना मानने और उनकी पूजा ना करने की शपथ दोहराते हुए दिख रहे हैं। इस वीडियो के साथ सोशल मीडिया पर यह दावा किया गया कि भाटी ने हिंदू धर्म का त्याग करके बौद्ध धर्म अपना लिया है। हालांकि, बाद में उन्होंने एक वीडियो बनाकर सफाई दी कि उन्होंने अपना धर्म नहीं बदला है और ना ही ऐसा कोई इरादा रखते हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पूजा ना करने की शपथ वाला वीडियो वायरल होने के बाद विवादों से घिरने पर राजकुमार भाटी अब सफाई दे रहे हैं कि वह हिंदू ही हैं और धर्म नहीं बदलने जा रहे हैं। राजकुमार भाटी ने हिंदू धर्म की जमकर तारीफ भी की है और कहा कि यह बहुत उदार धर्म है। उन्होंने कहा कि भाजपा उन्हें बदनाम करने के लिए उनके खिलाफ सोशल मीडिया पर अभियान चला रही है। भाटी ने कहा कि वह 20 अक्टूबर को दिल्ली के रानी झांसी मार्ग स्थित अंबेडकर भवन में भारतीय बौद्ध महासभा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मैं मुख्य अतिथि के तौर पर सम्मिलित हुए थे। उन्होंने कहा कि एक सच्चा समाजवादी होने के नाते वह प्रत्येक धर्म, जाति, वर्ग और समुदाय का सम्मान करते हैं और जो भी अपने कार्यक्रम में सम्मान के साथ आमंत्रित करता है उसमें सम्मिलित होते हैं।

यूपी के हर जिले में 26 अक्टूबर को वाल्मीकि जयंती मनाएगी योगी सरकार, चित्रकूट में बड़ा आयोजन

नई दिल्ली,(एजेंसी)। योगी सरकार 26 अक्तूबर को पूरे प्रदेश में धूमधाम से वाल्मीकि जयंती मनाएगी। इस अवसर पर आस्था, भक्ति और भारतीय सांस्कृतिक विरासत का व्यापक उत्सव मनाया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर प्रदेश के सभी 75 जनपदों में सैकड़ों महर्षि वाल्मीकि मंदिरों और रामायण से जुड़े प्रमुख स्थलों पर दीपदान, रामायण पाठ, भजन और भक्तिमय सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाएंगे। इन आयोजनों के जरिए आदि कवि महर्षि वाल्मीकि की कालजयी रचना ‘रामायण’ में निहित मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाने की तैयारी है। महर्षि वाल्मीकि की तपोस्थली चित्रकूट में वृहद कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी योगी सरकार स्थानीय कलाकारों को आध्यात्मिक मंच देगी। योगी सरकार के निर्देशानुसार 26 अक्तूबर को उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों में वाल्मीकि जयंती मनाई जाएगी। सभी देव मंदिरों, महर्षि वाल्मीकि से संबंधित स्थलों आदि पर दीप प्रज्ज्वलन, दीपदान के साथ-साथ रामायण पाठ कराए जाएंगे। यह कार्यक्रम जनपद, तहसील व विकास खंड स्तर पर होंगे। मुख्यमंत्री ने हर आयोजन स्थल पर साफ-सफाई, पेयजल, ध्वनि, प्रकाश व सुरक्षा की पुख्ता व्यवस्था का निर्देश दिया है। आयोजन में पूजन-हवन के साथ लवकुश प्रसंग समेत अन्य कार्यक्रम भी होंगे। इसके अलावा तुलसीदास आश्रम राजापुर चित्रकूट, वाल्मीकि आश्रम बिठूर



कानपुर, वाल्मीकि आश्रम श्रावस्ती, अयोध्या, प्रयागराज समेत पूरे प्रदेश में आयोजन होगा। चित्रकूट के क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी डीके शर्मा ने बताया कि योगी सरकार के निर्देशानुसार महर्षि वाल्मीकि की तपोस्थली लालापुर में जिला प्रशासन की ओर से वृहद

कार्यक्रम होंगे। यहां रामलीला का मंचन, वाल्मीकि रामायण पाठ, भजन संध्या और स्थानीय कलाकारों द्वारा भजन पर्यटन अधिकारी डीके शर्मा ने बताया कि योगी सरकार के निर्देशानुसार महर्षि वाल्मीकि की तपोस्थली लालापुर में जिला प्रशासन की ओर से वृहद

आवास विकास के प्लाट और मकान लेने का मौका, लखनऊ समेत 7 शहरों में होगी नीलामी
नई दिल्ली,(एजेंसी)। उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद लखनऊ समेत सात शहरों में आवासीय प्लाट, मकान और व्यावसायिक संपत्तियां लेने का मौका है। इन सात शहरों में आवासीय, व्यावसायिक और शैक्षिक संपत्तियों की ऑनलाइन नीलामी कराने जा रहा है। इसके तहत राजधानी लखनऊ समेत सात शहरों की विभिन्न योजनाओं में खाली पड़े प्लाट, मकान और अन्य संपत्तियों को बेचा जाएगा। इच्छुक लोग चार नवंबर तक ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे, जबकि पांच नवंबर को ई-नीलामी होगी। दशहरा और दीपावली के अवसर पर उत्तर प्रदेश आवास विकास परिषद कोई बड़ी आवासीय योजना शुरू नहीं कर सका है। ऐसे में पहले से संचालित योजनाओं में खाली संपत्तियों को नीलामी के जरिए बेचने की तैयारी है। लखनऊ में अवध विहार योजना, डायमंड डेयरी योजना, इंदिरा नगर, इंदिरा नगर विस्तार, आग्रपाली योजना, राजाजीपुरम, विकास नगर और वृंदावन आवासीय योजना समेत अन्य क्षेत्रों में संपत्तियां उपलब्ध हैं। लखनऊ के अलावा मेरठ, बरेली, वाराणसी, गोरखपुर और कानपुर क्षेत्र में भी संपत्तियों की नीलामी की जाएगी। राजधानी क्षेत्र के अंतर्गत अयोध्या, बाराबंकी, हरदोई, सीतापुर, सुलतानपुर और लखीमपुर खीरी में भी प्लाट उपलब्ध हैं। इन संपत्तियों में आवासीय भूखंडों के साथ व्यावसायिक और शैक्षिक उपयोग की संपत्तियां भी शामिल हैं। आवास आयुक्त अनिल ढींगरा ने बताया कि चार नवंबर तक आवेदन वाली संपत्तियों की नीलामी पांच नवंबर को होगी। जिन भूखंडों के लिए केवल एक बोली प्राप्त होगी, उनके लिए दोबारा आवेदन मांगे जाएंगे। इसके लिए सात से 26 नवंबर तक पंजीकरण होगा और 27 नवंबर को ऑनलाइन नीलामी कराई जाएगी। वहीं गोमती रिवर फंट घूमने जाने वालों के लिए राहत की खबर है।

सीएम योगी देंगे नियुक्ति पत्र.नौकरी का झांसा देकर 43 लोगों से ठगी, ऐसे फंसाया

कानपुर,(एजेंसी)। शिक्षा विभाग में नौकरी लगवाने के नाम पर 43 लोगों से 80 लाख रुपये से ज्यादा की ठगी का मामला आया है। खुद को उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन आयोग प्रयागराज के संयुक्त सचिव का रिश्तेदार बता लोवर डिवीजन वलर्क, और चपरासी की नौकरी दिलाने के नाम पर रुपये ँट लिए। एक पीड़ित ने पुलिस कमिश्नर कार्यालय में शिकायत कर कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराई है। बिरहाना रोड निवासी शरद अवस्थी ने बताया कि वह बेकनगंज स्थित सिनेमा घर में केयरटेकर हैं। फजलगंज का नीरज मिश्रा बिजली का काम करने आता था। वर्ष 2024 में मुलाकात के दौरान नीरज ने बताया कि उसके ममिया ससुर अरविंद नारायन माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन आयोग प्रयागराज में संयुक्त सचिव हैं। उन्होंने कानपुर देहात के एक स्कूल में चतुर्थ श्रेणी के पद पर उसकी नौकरी लगवा दी है। उसने उनके बच्चों को

राज्यपाल के कोटे से पांच लाख रुपये में नौकरी लगवाने का झांसा दिया। ढाई लाख रुपये पहले और ढाई लाख बाद में देने की बात कही। उन्होंने उसे ढाई लाख दे दिए। इसके बाद उनके बेटे और बेटा के लखनऊ ले जाकर फार्म भरवाया। फिर नियुक्ति पत्र देने के लिए तारीखें देता रहा। जानकारी करने पर पता चला कि वह 43 लोगों से नौकरी के नाम पर 80 लाख ले चुका है। कोतवाली थाना प्रभारी अरुण द्विवेदी ने बताया कि रिपोर्ट दर्जकर जांच की जा रही है। शिक्षा विभाग में नौकरी लगवाने का झांसा देकर 43 लोगों से 80 रुपये ठगने वाले शातिर ने बड़े-बड़े दावे कर लोगों को अपने जाल में फांसा। उन्हें बताया कि उसके ममिया ससुर शिक्षा सेवा चयन आयोग के संयुक्त सचिव हैं और नौकरी लगने के बाद सीएम नियुक्ति पत्र देंगे। इतना ही नहीं वह पीड़ितों को प्रयागराज माध्यमिक शिक्षा कार्यालय और लखनऊ शिक्षा निदेशालय तक ले गया।

कांग्रेस ने सपा को दे दी टेंशन; थमाई 170 सीटों की लिस्ट, 115 से कम पर नहीं मानेगी

नई दिल्ली,(एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव की सरगमीं तेज होती जा रही है। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी में सीट शेयरिंग को लेकर बातचीत की शुरुआत हो चुकी है। इसी के तहत कांग्रेस ने समाजवादी पार्टी के साथ लगभग 170 विधानसभा सीटों की एक सूची साझा की है। कांग्रेस सूत्रों के मुताबिक, पार्टी ने अपनी चुनावी संभावनाओं और जमीनी स्तर पर अपनी संगठनात्मक ताकत के आकलन के आधार पर इन सीटों को चार श्रेणियों में बांटा है। इंडिया टुडे ने अपनी एक रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से बताया कि कांग्रेस ने श्रेणी, की सीटों पर अपना रुख लगभग तय कर लिया है, जिसमें समझौते की गुंजाइश बहुत कम है। श्रेणी C की सीटों में कुछ बदलाव किए जा सकते हैं, जबकि श्रेणी C और D में रखी गई सीटों पर पार्टी



बातचीत के लिए तैयार है। कांग्रेस सीटों की किसी निश्चित संख्या पर जोर नहीं दे रही है, बल्कि वह गठबंधन में एक सम्मानजनक हिस्सेदारी चाहती है। सीटों के बंटवारे पर बातचीत के लिए दोनों पार्टियों के नेताओं को मिलाकर एक संयुक्त समिति भी बनाई जा सकती है। कांग्रेस के एक वरिष्ठ सूत्र ने कहा कि भाजपा को हराना दोनों पार्टियों का साझा लक्ष्य है और इसे हासिल करने के लिए दोनों पक्ष जरूरी समझौते

करने को तैयार रहेंगे। कांग्रेस 403 सदस्यों वाली उत्तर प्रदेश विधानसभा में ज्यादा सीटों की मांग कर रही है। इसके लिए पार्टी 2024 के लोकसभा चुनावों में अपने प्रदर्शन और उत्तर भारत में राहुल गांधी की बढ़ती लोकप्रियता की बात कह रही है। कांग्रेस नेताओं ने कहा है कि पार्टी 115-120 से कम सीटों पर समझौता करने के लिए तैयार नहीं है। उत्तर प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम ने भी यह सुझाव दिया है कि पार्टी को विधानसभा की 50 प्रतिशत सीटों पर चुनाव लड़ना चाहिए। 2024 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में कांग्रेस ने लोकसभा की छह सीटें जीती थीं। पार्टी 2017 के विधानसभा चुनावों के अपने अनुभव से भी सीख ले रही है, जब समाजवादी पार्टी (सपा) के साथ गठबंधन में 114 सीटों पर चुनाव लड़ी

वाहन व 1737 हल्के वाहनों को चुनाव कार्य में लगाया गया है। जिन पांच खंड स्नातक क्षेत्र में चुनाव होगा उनमें लखनऊ, अगारा, मेरठ, वाराणसी व इलाहाबाद-झांसी खंड स्नातक निर्वाचन क्षेत्र शामिल हैं। वहीं जिन छह खंड शिक्षक क्षेत्र में चुनाव होगा उनमें लखनऊ, अगारा, मेरठ, वाराणसी, बरेली-मुरादाबाद व गोरखपुर-फैजाबाद खंड शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र शामिल हैं। मतदाता के पास अगर फोटो युक्त मतदाता पहचान पत्र नहीं है तो वह आधार कार्ड, झड़िंगा लाइसेंस, पासपोर्ट, पैन कार्ड व विश्वविद्यालय की ओर से जारी डिग्री-डिलोमा का मूल प्रमाण पत्र सहित 10 दस्तावेज दिखाने होंगे। मतदाता सूची में शामिल नाम में लिपिकीय त्रुटि के कारण होने वाली गलतियों के चलते किसी भी वोटर को मतदान से वंचित नहीं किया जाएगा। जरूरी दस्तावेज देखकर पीठासीन अधिकारी मतदान कराएंगे। अगर

लिपिकीय त्रुटि के चलते किसी को भी मतदान से रोका गया तो डीएम जिम्मेदार होंगे। मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा की ओर से सख्त निर्देश दिए गए हैं कि लिपिकीय त्रुटि के चलते किसी भी मतदाता को मतदान करने से न रोका जाए। चुनाव वाले सभी जिलों में कंट्रोल रूम बनाए जाएं। जहां मतदान से रोके जाने पर शिकायत करने की सुविधा मतदाताओं को मिले। किसी भी कीमत पर कोई भी पात्र मतदाता नाम में लिपिकीय त्रुटि के चलते मतदान से वंचित नहीं किया जाएगा। सभी को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि शांतिपूर्ण ढंग से मतदान की प्रक्रिया संपन्न कराई जाए। लिपिकीय त्रुटि के चलते मतदान से रोकने की शिकायत मिली तो डीएम की जिम्मेदारी व जवाबदेही तय करते हुए कार्रवाई की जाएगी। विधान परिषद चुनाव के कारण वोटिंग वाले जिलों में 12वीं तक के स्कूल और शराब की दुकानें बंद हैं।

हाईवे पर लगे भीषण जाम में एक घंटे फंसी एंबुलेंस, सर्पदंश पीड़िता की तड़पकर मौत

हमीरपुर,(एजेंसी)। हमीरपुर का जाम महिला की जान ले गया। सर्पदंश की शिकार महिला को परिजन एंबुलेंस से जिला अस्पताल ले जा रहे थे पर कानपुर-सागर हाईवे पर लगे भीषण जाम में एंबुलेंस फंस गई। काफी कोशिश के बाद भी एंबुलेंस एक घंटे तक जाम से नहीं निकल पाई और तड़पकर महिला की मौत हो गई। भरुआ सुमेरपुर में चाय-पान की दुकान चलाने वाली 30 वर्षीय शहाना परवीन किसी तरह परिवार का भरण-पोषण करती थीं। पति फिरोज से अनबन के बाद से वह मायके में रहती थीं। शहाना के भाई सनी के मुताबिक गुरुवार सुबह वह घर में तख्त पर लेटी थीं तभी गर्दन के पास सांप ने काट लिया। हालत बिगड़ने पर बहन ने फोन किया। वह उसे लेकर पीपल्स सी सुमेरपुर भागा, जहां डॉक्टरों ने एटी स्केक वेनम इंजेक्शन लगाए और जिला अस्पताल रेफर कर दिया। कहा कि उसे सोने मत देना। एंबुलेंस से उसे लेकर हमीरपुर के लिए निकले। कुछेक के पास हाईवे पर लगे जाम में एंबुलेंस फंस गई। वहां से पांच किमी दूर हमीरपुर जिला अस्पताल पहुंचने में एक घंटे से ज्यादा लग गया। इस दौरान बहन तड़पती रही। आखिरकार बेतवा पुल पर उसकी सांसें थम गईं। दोपहर 12:10 पर शहाना को लेकर जिला अस्पताल की इमरजेंसी में पहुंचा, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर

दिया। पति से अनबन के बाद से कुछ सालों से शहाना अपने मायके में आकर रहने लगी थी। उसके एक नौ साल का पुत्र है। उसकी पढ़ाई-लिखाई और अन्य खर्चों के लिए शहाना ने फैक्ट्री एरिया में स्थित केमिकल फैक्ट्री के पास एक छोटी सी दुकान खोल ली थी। जिससे उसकी गुजर-बसर होने लगी थी। मृतका के भाई सनी ने बताया कि गुरुवार की सुबह करीब दस बजे के आसपास बहन घर के अंदर तख्त में लेटे हुए मोबाइल चला रही थीं, तभी उसे सांप ने गर्दन के पास डस लिया। आनन-फानन में पीपल्स सी फिर जिला अस्पताल लेकर भागे, लेकिन बीच रास्ते लगे जाम की वजह से शहाना की एंबुलेंस में ही मौत हो गई। जब वह लोग दिन के 12 बजे के आसपास जिला अस्पताल पहुंचे तो डॉक्टरों ने शहाना की मौत की पुष्टि कर दी। शहाना की शादी फिरोज से हुई थी। कुछ साल से पति से अनबन की वजह से शहाना मायके में आकर रहने लगी थी। उसके एक नौ साल का पुत्र है। गुरुवार को शहाना की मौत से परिवार में कोहराम मच गया। एंबुलेंस के स्टॉफ का कहना है कि वह मरीज को लेकर सुबह 11.17 बजे सुमेरपुर पीपल्स से हमीरपुर को चले थे। नरयानपुर से लेकर कुछेक तक सड़क में लगे जाम की वजह से एंबुलेंस को निकालने में कुछ समय लगा। इसी दरम्यान मरीज की मौत हुई।

कांग्रेस से सपा को मिल गई सीटों की सूची, अखिलेश बोले- आजम खां की राय पर ही घोषित होंगे प्रत्याशी

नई दिल्ली,(एजेंसी)। विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस की तरफ से समाजवादी पार्टी (सपा) को सीटों की सूची मिल गई है। सूची लेकर ही सपा प्रमुख अखिलेश यादव गुरुवार को रामपुर जेल में आजम खां से मिलने पहुंचे थे। दोनों नेताओं के बीच एक घंटे पर इस पर चर्चा हुई है। अखिलेश यादव ने यह भी साफ कर दिया कि आजम खां के ही सुझाव पर प्रत्याशियों और सीटों का चयन होगा। अखिलेश की जेल में मुलाकात और सीटों के उनसे मंथन से साफ हो गया है कि मोहम्मद आजम खां भले ही लंबे समय से सलाखों के पीछे हैं और हालिया कुछ चुनावों में उनकी या उनके परिवार की सीधी उम्मीदवारी

नहीं रही, लेकिन पार्टी के नीतिगत और रणनीतिक फैसलों में उनका प्रभाव आज भी बरकरार है। जेल से निकलते ही अखिलेश का यह कहना कि आजम थे, आजम हैं और आजम ही रहेंगे, पश्चिमी उत्तर प्रदेश की भावी राजनीति का सबसे बड़ा रणनीतिक संदेश दे गया है। विधानसभा चुनावों से ठीक पहले जेल की सलाखों के पीछे हुई इस मुलाकात को सपा मुखिया द्वारा वेस्ट यूपी और रुहेलखंड के सियासी समीकरणों को साधने के ‘मास्टरस्ट्रोक’ के रूप में देखा जा रहा है। जेल से निकलने पर अखिलेश यादव ने मीडिया के सामने बेबाकी से यह स्वीकार भी किया कि जेल के भीतर आजम खां से इंडिया गठबंधन के

खां से मुलाकात कर टिकटों के बंटवारे पर अंतिम मुहर लगाई थी। उस ‘सीतापुर मॉडल’ का नतीजा यह रहा था कि 2022 के चुनाव परिणामों में मुरादाबाद मंडल की 27 विधानसभा सीटों में से 17 पर सपा ने परचम फहराया था। मुरादाबाद मंडल और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के राजनीतिक आंकड़ों पर नजर दौड़ाएं, तो आज भी वहां सपा की मजबूती के पीछे आजम खां के जनाधार का सीधा प्रभाव दिखाई देता है वर्तमान में सपा और भाजपा दोनों ही दल जिताऊ प्रत्याशियों की तलाश के लिए निजी एजेंसियों से गुप्त सर्वे करा रहे हैं।

पश्चिम मध्य रेल					
सामग्री प्रबंधन विभाग					
(संभार आपूर्ति हेतु 'ई'-निविदा सूचना, संख्या ईपीएम/36/2026)					
प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक, पश्चिम मध्य रेल, भारत के राष्ट्रपति की ओर से, ई-खरीद प्रणाली के जरिए निम्नलिखित विज्ञापन निविदाएं आमंत्रित करते हैं। कोई भी हस्ताक्षरित/डाक प्रस्ताव स्वीकार नहीं किए जाएंगे। पूर्ण विवरण/ विनिर्देशन के लिए वेबसाइट https://ireps.gov.in" पर 'ई' निविदा संबंधी जानकारी प्राप्त की सकती है।					
क्र.	टेंडर नं.	संक्षिप्त वर्णन	निविदा मात्रा	नियत तारीख	
1	38265019	11" ब्रेक सिलिंडर विंग बिल्ट इन स्लैक एजस्टर फॉर BMSB विंग हैंड ब्रेक केबल्स to KBI पार्ट No. KP1802890	100 नंबर	10/11/2026	
2	30262004	11" ब्रेक सिलिंडर विंग बिल्ट इन स्लैक एजस्टर फॉर BMSB विंग हैंड ब्रेक केबल्स to KBI पार्ट No. KP1796330	100 नंबर		
3	61262421A	बोगी बोल्स्टर असेंबली 16. 25 T	80 नंबर	11/11/2026	
4	30261554A	सेट ऑफ नॉन-एम्बेस्टरस बेस्ड आर्गेनिक ब्रेक पैड फॉर डिस्क ब्रेक सिस्टम, 400 SQ. CM. एंड 35MM थिकनेस	20879 सेंट्स	12/11/2026	
5	38262407	फिट फॉर एम्प्टी लोड बॉक्स डिवाइज फॉर Box-N वेगन	3714 सेंट्स	13/11/2026	
6	30261553A	ब्रेक डिस्क फॉर व्हील सेट ऑफ LHB कोचेस	223 नंबर	17/11/2026	
7	62261045	डिस्क कोटिंग खादी 61 cms x 61cms	103151 नंबर	26/11/2026	
8	50255140A	सल्टाई ऑफ 6 Quad केबल 1.4mm dia	125 किलोमीटर	27/11/2026	
9	61261119B	टी-मैक्स इंस्टॉल सैंडविक पार्ट No- 175 32 301940 25 M 3015	9972 नंबर	30/11/2026	
10	8125WCRPT-24	सेट कॉन्ट्रैक्टर फॉर मनुईक्रेटर एंड सल्टाई ऑफ फिटिंग्स फॉर थिक वेब स्वीचेस फॉर 1 इन 12, टर्न आउट BD (1673 mm) फॉर 60 Kg on PSC स्लीपर्स	1800 सेंट्स	23/12/2026	

50 लाख रुपये से कम अनुमानित मुख्य वाली निविदाओं के लिए इच्छुक फर्मों को www.ireps.gov.in पर जाने की सलाह दी जाती है। (हरना) कृते प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक पश्चिम, पश्चिम मध्य रेल, जालनपुर

स्वच्छ भारत अभियान एक कदम स्वच्छता की ओर

